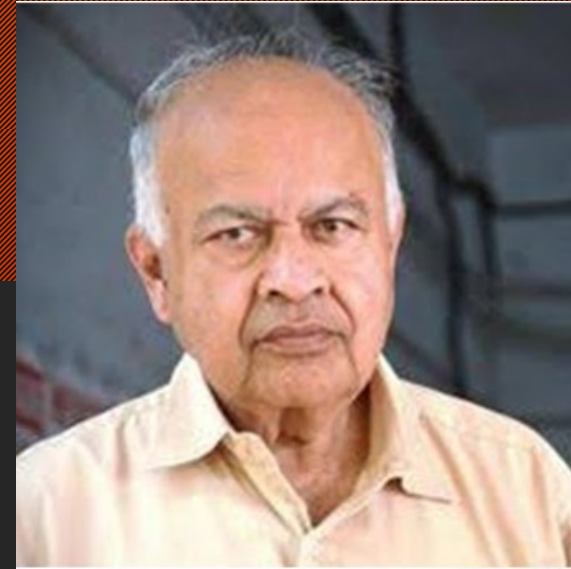


पार नज़र के



जयंत विष्णु नार्लीकर

मुख्य बिंदु

छोटू और उसका परिवार मंगल ग्रह की धरती के नीचे सुरंग बनाकर रहते हैं।



पहले मंगल ग्रह की धरती के ऊपर खास किस्म की पोशाक पहन कर सभी रहते थे।



वातावरण परिवर्तन के कारण प्राकृतिक संतुलन बिगड़ गया और छोटू के पूर्वजों ने तकनीकी ज्ञान के आधार पर अपने प्राण जमीन के नीचे घर बनाकर बचाए।

- छोटू के पापा खास किस्म के जूते-पोशाक पहनकर सुरंग के रास्ते से काम पर जाते थे। एक दिन छोटू चोरी से उस रास्ते पर जाने का प्रयास करता है पर जा नहीं पाता है। द्रंत

- एक दिन छोटू के पापा छोटू को कंट्रोल रूम ले जाते हैं जहाँ छोटू कंसोल पैनल, स्क्रीन देखता है। स्क्रीन पर एक अंतरिक्ष यान देखता है।

- ये अंतरिक्ष यान नासा के वैज्ञानिकों द्वारा भेजा गया था।

पाठ का सार

‘पार नज़र के’ कहानी जयंत विष्णु नार्लीकर द्वारा रचित है। आज हम जो कल्पना करते हैं कि मंगल ग्रह पर जीवन संभव है तो यह कैसे संभव रहा होगा, उस पर ही आधारित है। छोटू और उसका परिवार मंगल ग्रह की धरती के नीचे पर्यावरण असंतुलन के कारण अपनी तकनीकी ज्ञान से जान बचाकर रहते हैं। पर दूसरे ग्रहों को उनके बारे में नहीं पता। एक दिन पृथ्वी से नासा के वैज्ञानिकों मंगल ग्रह की धरती के मिट्टी का नमूना लेने भेजा और उनका विमान खराब हो गया। पर मंगल ग्रह के लोगों ने चुपचाप इस क्रिया को देखा वो प्रतिक्रिया देकर सबके सामने नहीं आना चाहते थे। अंततः विमान ठीक हो जाता है और मंगल ग्रह की मिट्टी के नमूने ले आता है। इस तरह वैज्ञानिक गतिविधियों पर आधारित यह पाठ बड़ा ही रोमांचक है।